

Vol 4 Issue 4 Oct 2014

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595

ISSN No.2231-5063

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board. Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho Federal University of Rondonia, Brazil	Mohammad Hailat Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken	Hasan Baktir English Language and Literature Department, Kayseri
Kamani Perera Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka	Abdullah Sabbagh Engineering Studies, Sydney	Ghayoor Abbas Chotana Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]
Janaki Sinnasamy Librarian, University of Malaya	Ecaterina Patrascu Spiru Haret University, Bucharest	Anna Maria Constantinovici AL. I. Cuza University, Romania
Romona Mihaila Spiru Haret University, Romania	Loredana Bosca Spiru Haret University, Romania	Ilie Pinteau, Spiru Haret University, Romania
Delia Serbescu Spiru Haret University, Bucharest, Romania	Fabricio Moraes de Almeida Federal University of Rondonia, Brazil	Xiaohua Yang PhD, USA
Anurag Misra DBS College, Kanpur	George - Calin SERITAN Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences AL. I. Cuza University, IasiMore
Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania		

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India	Iresh Swami Ex - VC. Solapur University, Solapur	Rajendra Shendge Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur
R. R. Patil Head Geology Department Solapur University,Solapur	N.S. Dhaygude Ex. Prin. Dayanand College, Solapur	R. R. Yaliker Director Managment Institute, Solapur
Rama Bhosale Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel	Narendra Kadu Jt. Director Higher Education, Pune	Umesh Rajderkar Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik
Salve R. N. Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur	K. M. Bhandarkar Praful Patel College of Education, Gondia	S. R. Pandya Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai
Govind P. Shinde Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai	Sonal Singh Vikram University, Ujjain	Alka Darshan Shrivastava Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar
Chakane Sanjay Dnyaneshwar Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune	G. P. Patankar S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka	Rahul Shriram Sudke Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore
Awadhesh Kumar Shirotriya Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)	Maj. S. Bakhtiar Choudhary Director,Hyderabad AP India.	S.KANNAN Annamalai University,TN
	S.Parvathi Devi Ph.D.-University of Allahabad	Satish Kumar Kalhotra Maulana Azad National Urdu University
	Sonal Singh, Vikram University, Ujjain	

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org



**गोंड जनजाति की वास्तविक जीवन शैली
मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा जिले की जुन्नारदेव जनपद
पंचायत के विभिन्न गावों का एक अध्ययन**

Kamalesh Pal

Allahabad

सारांश :- गोंड भारत की प्रमुख जनजातियों में से एक है। मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के पठारी तथा जंगली भागों में अनेक जनजातियों के लोग रहते हैं जिनमें सर्वाधिक संख्या गोंड जनजाति की है। मध्यप्रदेश में गोंड जनजातियों का विस्तार सतपुड़ा रेंज के छिंदवाड़ा, बैतूल, हरदा, होशंगाबाद, सिवनी, नरसिंहपुर तथा मंडला में प्रमुख रूप से फैला हुआ है। इनकी संतोषी एवं जीने खाने की मानसिकता इन्हें विकास की मुख्यधारा से आज भी अलग किये हुए है। आज भी जीवन यापन के श्रोत के प्रति इनकी सजगता नगण्य है। कठोर परिश्रम इनकी परम्परा की बेड़ी में बंधा हुआ है। परिश्रम और रुढ़ियों इनके जीवन से आज भी पृथक नहीं हो रही हैं। शासकीय कार्यक्रमों और योजनाओं के बावजूद आज भी अपनी परम्परागत जीवन शैली को बनाये हुए हैं।

प्रस्तावना:-

मध्यप्रदेश का छिंदवाड़ा जनपद के प्राकृतिक संसाधनों के बहुमुखी नगरी के रूप में जुन्नारदेव को देखा और जाना जा सकता है यहाँ पर मूलरूप से तो जनजातीय संस्कृति के परिवेश में बसी हुई इस समाज की सामाजिक धरोहर नजर आती है किन्तु कोल इंडिया के प्रमुख श्रोत के रूप में उत्पन्न कोल इंडिया के संसाधनों में सम्पूर्ण भारत की संस्कृति के लिए विभिन्न क्षेत्रों से आये लोगों के बीच भी इस जनजातीय समाज की समस्याएँ एवं उनकी स्वास्थ्य व्यवस्था, चिकित्सा एवं उसकी पद्धति, इनके वैवाहिक जीवन, इनकी भाषा, शिक्षा के स्तर आदि को देखकर इसके पिछड़ेपन के कारण जुन्नारदेव को अलग से ही पहचाना जा सकता है। व्यवसाय में बर्तन बनाना, चटाई टोकरी एवं सूपा के साथ जुन्नारदेव का अधिकांश जनजाति आज भी अपने उपयोग के लिए विभिन्न खाद्य वस्तुयें जंगलों से प्राप्त करता है। शोध यात्रा के दौरान दमुआ और नन्दन की साप्ताहिक बाजारों में सुदूर ग्रामीणों से आने वाले जनजातियों को वनों से खोदकर लाये विभिन्न प्रकार के कांदा, छिन्दो कांदा, पाजर कांदा, चांदी कांदा आदि को सुखाकर एवं भूनकर खाते देखा। वन सिंघाड़ा एवं वन अदरक का औसत के अनुरूप उपयोग करते देखा। इन जनजातियों के सब्जियों का श्रोत भी वन ही दिखाई देता है। महुआ, गोंद, चिरींजी, मकोई, आंवला, गूलर, इमली आदि को भोजन के रूप में अपनाने वाले अधिकांश जनजातियों के सामाजिक आर्थिक जीवन महुआ पर केन्द्रित है। खनिज उत्खनन में मजदूरी करना ही इनकी सर्वोच्च उपलब्धि दिखाई देती है। संयोग से यह जनजातीय क्षेत्र वन सम्पदा की भाँति खनिज सम्पदा में भी सम्पन्न है और छिंदवाड़ा जिले की इस जनपद पंचायत में कोयले का अकूत भंडार है। इस कारण से जनजाति बाहुल्य इस क्षेत्र की शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर भी बदला हुआ प्रभाव दिखाई देता है। दमुआ और जुन्नारदेव दोनों स्थानों पर शासकीय महाविद्यालय स्थापित हैं यद्यपि कि इन महाविद्यालयों के अध्ययन अध्यापन व्यवस्था को इस क्षेत्र का जनजातीय समाज न तो अपेक्षाकृत प्रभावित कर पाया है और न ही लाभान्वित कर रहा है। इस अनुशीलनों के दौरान मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि शैक्षणिक सुविधाओं को बढ़ाने मात्र से जुन्नारदेव के जनजातियों में साक्षरता का प्रतिशत नहीं बढ़ रहा है। जनजातीय संस्कृति की सबसे बड़ी पहचान मुझे देखने को मिली कि प्रत्येक बालक-बालिका एक मुँह के साथ दो हाथ लेकर आता है और अपने परिवार का वह कार्यकर्ता बना रहता है परिणामतः वह कमाने लगता है।

फलतः उसे या तो स्कूल भेजा नहीं जाता अथवा वह केवल मध्याह्न भोजन मात्र के लिए अल्पकालिक एवं अनियमित होता है। दमुआ, राखीकोल, घोरावाड़ी खुर्द, बिलावर कलों, करन पिपरिया आदि जनजाति बाहुल्य क्षेत्रों का भ्रमण करने के दौरान मैंने पाया कि माध्यमिक विद्यालयों की उम्र तक वह कमाऊँ पूत समझा जाने लगता है। तमाम शासकीय कार्यक्रमों एवं योजनाओं के बाद भी जनजातीय साक्षरता बहुत कम है। यद्यपि कि इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि स्वतंत्र भारत के विभिन्न कार्यक्रमों एवं सामान्य कल्याणकारी योजनाओं के फलस्वरूप इनकी साक्षरता में भी निरन्तर वृद्धि हो रही है। परन्तु यह वृद्धि जनजातीय जनसंख्या को सामान्य जनसंख्या के समकक्ष नहीं पा सकती है। जहाँ तक स्त्री और पुरुष साक्षरता की दरों का प्रश्न है, शासकीय आँकड़ें चाहे कुछ भी बताते हैं पर मुझे तो साक्षर पुरुष और स्त्रियों का अनुपात 5 और 1 ही नजर आता है। जुन्नारदेव का जनजातीय समाज भले ही कोल इण्डिया के सम्पर्क में हो लेकिन वह अपनी भाषायी संस्कृति को संभाले हुये है। बहु भाषा-भाषी क्षेत्र होने के बावजूद भी जनजातीय समुदाय की वेश-भूषा, रीति-रिवाज, खान-पान, बोली भाषा प्रभावित नहीं हो रही है और ये अपनी बोलियों एवं भाषाओं को अब भी अपनाते नजर आते हैं। जनजाति अभी भी अपनी बोलियों संजोए हुए हैं, इसमें संदेह नहीं है। अतः विकास की योजनायें बनाते समय शासन को इस तथ्य पर ध्यान देना आवश्यक है। आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाओं को अपनाने में जनजाति शिक्षा की तुलना में अब भी पीछे हैं। आज भी स्वास्थ्य संबंधी उनके विचार, अंधविश्वास एवं धर्म के नियमों से नियंत्रित होते हैं, केवल अस्वस्थता की चरम सीमा आने पर ही वह अपने धार्मिक आदेशों की सीमा लांघने के लिए विवश होते हैं और अस्पताल एवं डाक्टर के पास जाते हैं।

शोध यात्रा के दौरान परिचर्चा के बाद यह निष्कर्ष में यह पाया कि जनजातियों में कोई बीमारी या प्रकोप हो तो उसके वे केवल दो ही कारण मानते हैं। एक ग्रामी देवी-देवता का क्रुद्ध होना, दूसरा जादू-टोना एवं भूत-टोटका। मैंने जुन्नारदेव की सामाजिक व्यवस्था में अस्वस्थता के इन दोनों कारणों को दूर करने के लिए किये गये उपायों का अनुशीलन करने पर पाया कि गाँव में अलग-अलग विशेषज्ञ नियत होते हैं। राखी कोल ग्राम पंचायत में इन देवी-देवताओं को संतुष्ट करने में उन्हें शांत कराने का काम 'समना कोल' को दिया गया था जिन्हें लोग आदर्श से पंडा बाबा कहा करते थे। इस समना कोल के नेतृत्व में शांत कायम करने की एक निश्चित पद्धति है। अनिष्ट कारक एवं आसुरी पद्धति से राखी कोल को सुरक्षित रखने की इस पंडा बाबा के नेतृत्व में बल-पूजन का वार्षिक कार्य रखा जाता है। इस गाँववासियों की यह धारणा है कि ऐसा करने से चेचक आदि से भी बचा जा सकता है। इसी क्षेत्र में इसी अनुक्रम में मुझे कालू बैगा से मुलाकात हुई और यह बताया गया कि इस बैगा से सम्पर्क किया जाता है और वह अपनी नियत फीस लेकर झाड़-फूँक आरम्भ करता है और यह कार्यक्रम मरीज के अन्त तक चलता रहता है। इस जनजाति डाक्टर बैगा द्वारा झाड़-फूँक वास्तव में एक यातनापूर्ण प्रक्रिया है। हाँ एक तथ्य अवश्य ही प्रतीत हुआ कि ये लोग अनेक औषधि वाले पौधे जानते हैं। पौधों की जड़ से लेकर पत्ती तक की उपयोगिता का ज्ञान इन्हें होता है। इस संदर्भ में सबसे उल्लेखनीय तथ्य यह है कि इस शोध कार्य के दौरान आधुनिक चिकित्सा पद्धति के सहारे स्वास्थ्य परीक्षण कराने वाले की मृत्यु पर यह बैगा आधुनिक पद्धतियों की विफलता को उजागर करते हुए अपनी धाक जमाने की कोशिश करता है। इस तरह वह अपनी अनन्त कालीन विश्वास और अपने रूढ़िवादी विचार को तोड़ नहीं पाता है। अगर ऐसा होता भी है तो वह सरकारी तंत्र की लम्बी प्रक्रिया से बच निकलने के लिए निजी डाक्टरों के पास जाता है। पंचायतीराज व्यवस्था के लागू हो जाने के बाद भी इस तरह की अवरोधक प्रक्रिया भी निश्चित ही अलग शोध का विषय है।

संदर्भ

- 1.मौर्य, एस. डी. (2004), सामाजिक भूगोल, शारदा पुस्तक भवन 11 यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद, पृष्ठ 521।
- 2.मौर्य, एस. डी. (2004), सामाजिक भूगोल, शारदा पुस्तक भवन 11 यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद, पृष्ठ 520।
- 3.तिवारी, एस. के., (1984), मध्य प्रदेश की आदिवासी, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल (म०प्र०)।
- 4.तिवारी, एस. के., मध्य प्रदेश की जनजाति संस्कृति, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल (म०प्र०)।
- 5.ट्राइवलस ऑफ कास्टस ऑफ सैन्ट्रल प्राविन्सेस ऑफ इंडिया (वोल्यूम 4) कास्मस पब्लिकेशन नई दिल्ली।
- 6.वैद्य, नरेश कुमार (2003), जनजातीय विकास, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

Publish Research Article International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper, Summary of Research Project, Theses, Books and Book Review for publication, you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed, India

- * International Scientific Journal Consortium
- * OPEN J-GATE

Associated and Indexed, USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Database
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005, Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org